

चतुर चूड़ामणि

(१५)

प्रेम पराविधि प्रीतम साईं

सब विधि चतुर, चतुर चूड़ामणि विचरत अज्ञ की नाई ॥

अतिशय नेहु कियो अति भोरो पूरण महिमा माहीं

मुशकण मधुर कसकनि मधुरी विलसन मधुर सदाई ॥१॥

उज्ज्वल रस श्रंगार उपासक वात्सल्य रस धर साईं

श्री जनक लली पंकज अलीमन मकरदं पान कराई ॥२॥

सति संगति सींगार मनोहर वचन सुध वर्षाईं

शील सलोनो सुखदेवी अ छोनो जड़ चेतन आशीष चाहीं ॥३॥

नृमल नेह निबाह निपुण नितु लीला निकुंज वसाईं

ढकण ढर अडोल अनंदी मंगत जन दर लहहि न नांही ॥४॥

इन्द्रय जीत पुनीत परम पथ हरिरस निधि हर्षाईं

लोकोतर लावण्य निधि प्रभु नित लालण लाद लदाई ॥५॥

गरीबि श्रीखण्डि गुण सागर गहिबर

शेष शारदा पार न पाईं

दुल्हन राणी श्रीजू पद दूल्ह की

सिग सेवकि नाम धराई ॥६॥